दालों की महंगाई: तुर का उत्पादन संकट और चने की भंडार पहेली

प्रकाशन: 26 नवंबर 2026

समाचार-संदर्भ: 25 नवंबर 2026 (विशेषज्ञ विश्लेषण)

प्रिलिम्स: दलहन आत्मनिर्भरता मिशन, तुर और चना, उत्पादन अनुमान

मुख्य परीक्षा: सामान्य अध्ययन-III, कृषि, खाद्य मुद्रास्फीति, बफर स्टॉक नीति



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com।

खबरों में क्यों

देश में दालों के दाम तेज़ी से बढ़ रहे हैं। एक विशेषज्ञ विश्लेषण (25 नवंबर) के अनुसार लगातार 15 महीने की अपस्फीति (डिफ्लेशन) के बाद दालों की थोक मुद्रास्फीति मई 2026 में धनात्मक हुई और अक्टूबर तक **12.7 प्रतिशत** पहुँच गई। मंडी भाव (एगमार्कनेट) और तेज़ हैं: 17 नवंबर तक चना लगभग **73 रुपये प्रति किलोग्राम** (पिछले वर्ष से करीब 32 प्रतिशत अधिक) और तुर (अरहर) लगभग **97 रुपये प्रति किलोग्राम** (करीब 51 प्रतिशत अधिक) पर था। उपभोक्ता मामलों के विभाग के आँकड़ों के अनुसार खुदरा में चना दाल लगभग 96 रुपये और तुर दाल लगभग 137 रुपये प्रति किलोग्राम बिक रही है।

निचले आधार का असर: लेख के अनुसार इस उछाल का एक हिस्सा निचले आधार (लो-बेस) से भी समझा जा सकता है, क्योंकि पिछले वर्ष दोनों दालें न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) से नीचे बिक रही थीं। इसलिए प्रतिशत वृद्धि को स्तर के साथ पढ़ना चाहिए।

स्रोत सूचना: इस लेख के उत्पादन आकलन और भाव-आँकड़े एक विशेषज्ञ विश्लेषण और बाज़ार आँकड़ों से लिए गए हैं, ये अंतिम सरकारी अनुमान नहीं हैं। मिशन से जुड़े तथ्य PIB से हैं।

तुर: उत्पादन की चिंता

मूल बात समझिए: तुर एक ख़रीफ़ दाल है जिसकी कटाई नवंबर-दिसंबर से शुरू होती है। अगर ख़रीफ़ में सूखा पड़े तो फ़सल छोटी रह जाती है और बाज़ार में कमी की आशंका से व्यापारी स्टॉक रोक लेते हैं, जिससे दाम और बढ़ते हैं।

रकबा बढ़ा, पर फ़सल पर संकट: इस ख़रीफ़ में तुर का क्षेत्रफल 3.2 प्रतिशत बढ़कर **47.93 लाख हेक्टेयर** हुआ, लेकिन महाराष्ट्र और कर्नाटक में सूखे ने नुक़सान पहुँचाया। ये दोनों राज्य मिलकर देश के तुर उत्पादन का लगभग **54 प्रतिशत** देते हैं। कर्नाटक में लगभग 10.14 लाख हेक्टेयर, यानी वहाँ के लगभग दो-तिहाई तुर क्षेत्रफल, पर सूखे का असर पड़ा (फ़सल मौसम निगरानी समूह के हवाले से)।

उत्पादन का अनुमान: लेख के अनुसार शुरुआती बाज़ार आकलन 2026-27 में तुर का उत्पादन **25 से 28 लाख टन** बताते हैं। तुलना के लिए, कृषि मंत्रालय के तीसरे अग्रिम अनुमान (PIB, 27 मई 2026) में 2025-26 का तुर उत्पादन 35.92 लाख टन है। यानी आकलन के अनुसार गिरावट बड़ी हो सकती है, पर यह अंतिम सरकारी अनुमान नहीं है।

आयात का सहारा: लेख के अनुसार पिछले वर्ष तुर का आयात घरेलू उत्पादन के लगभग **40 प्रतिशत** के बराबर था। इस बार म्यांमार और अफ़्रीका के कुछ निर्यातक भारत की माँग बढ़ने की उम्मीद में शिपमेंट टाल रहे हैं।

चना: भंडार की पहेली

विरोधाभास: कृषि मंत्रालय के तीसरे अग्रिम अनुमान (PIB, 27 मई 2026) में 2025-26 का चना उत्पादन **125.14 लाख टन** है, जबकि लेख के अनुसार अनुमानित वार्षिक उपभोग 95 लाख से 1 करोड़ टन है। सरकारी एजेंसियों के पास काफ़ी बड़ा भंडार भी है। फिर भी दाम बढ़ रहे हैं।

तीन संभावनाएँ: या तो फ़सल अनुमान से छोटी थी, या स्टॉक रोका जा रहा है, या महँगी तुर से माँग चने की ओर खिसक रही है। लेख के अनुसार सरकार के पास अभी इसका पक्का उत्तर नहीं है।

आगामी चिंता: 13 नवंबर तक चने की बुवाई केवल 31.1 लाख हेक्टेयर हुई थी, जो पिछले वर्ष से लगभग **22 प्रतिशत कम** है। देरी से बुवाई, असमान मृदा नमी और रबी सीज़न के उत्तरार्ध में सामान्य से अधिक तापमान का जोखिम अनिश्चितता बढ़ाते हैं। ऑस्ट्रेलिया की चना फ़सल के आधी रह जाने के अनुमान से आयात का सहारा भी कमज़ोर है।

दोनों के हल अलग क्यों

तुर के लिए: लेखकों का तर्क है कि प्राथमिकता आपूर्ति सुरक्षित करना है। सरकारी स्टॉक की पुष्टि कर उसे विवेक से छोड़ा जाए, मार्च 2027 के बाद भी शुल्क-मुक्त आयात की खिड़की बढ़ाई जाए, और महाराष्ट्र-कर्नाटक में ज़िला स्तर पर फ़सल क्षति का आकलन हो।

तुर का सरकारी स्टॉक: लेख इसे अस्थायी रूप से लगभग 7 लाख टन बताता है, जबकि प्रेस रिपोर्टें अलग आँकड़ा देती हैं (लगभग 9.7 लाख टन, 20 नवंबर की एक समाचार रिपोर्ट के अनुसार)। इसलिए पहले सत्यापित आँकड़ा सामने आना ज़रूरी है।

चने के लिए: लेखकों का तर्क है कि पहला काम यह पता लगाना है कि असल में कितना स्टॉक उपलब्ध है। NAFED और NCCF के सत्यापित भंडार, निजी स्टॉक का खुलासा और अनुमानित रिलीज़ योजना बाज़ार को शांत कर सकती है। उनका सुझाव है कि पीली मटर पर 30 प्रतिशत शुल्क अभी बना रहे, क्योंकि सस्ता आयात बुवाई पर असर डाल सकता है।

स्टॉक सीमा का समय: लेखकों के अनुसार तुर की नई फ़सल कुछ ही हफ़्तों में आने वाली है, इसलिए अभी स्टॉक सीमा लगाने से कटाई के समय व्यापारियों की खरीद सीमित होगी। चने की कटाई चार महीने दूर है, इसलिए वहाँ नीति का स्वरूप अलग होना चाहिए।

सरकारी कदम: प्रेस रिपोर्टों के अनुसार उपभोक्ता मामलों के विभाग ने 13 नवंबर को दालों के स्टॉक की साप्ताहिक घोषणा अनिवार्य कर दी है, जो हर शुक्रवार करनी होगी। रिपोर्टों में सरकारी बफ़र लगभग 38 लाख टन बताया गया है, जिसमें चना लगभग 16.1 लाख और तुर लगभग 9.7 लाख टन है।

दलहन आत्मनिर्भरता मिशन

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 1 अक्टूबर 2025 को **दलहन आत्मनिर्भरता मिशन** को मंज़ूरी दी और इसे 11 अक्टूबर 2025 को शुरू किया गया। इसका परिव्यय **11,440 करोड़ रुपये** है। लक्ष्य 2030-31 तक दलहन उत्पादन **350 लाख टन** और क्षेत्रफल **310 लाख हेक्टेयर** करना है। आधार वर्ष 2023-24 में उत्पादन 242 लाख टन और क्षेत्रफल 275 लाख हेक्टेयर था। तीसरे अग्रिम अनुमान में 2025-26 का कुल दलहन उत्पादन 274.09 लाख टन है (PIB, 7 अगस्त 2026)।

लेख के अनुसार दलहन क्षेत्रफल 2021-22 से घट रहा है, इसलिए लक्ष्य महत्वाकांक्षी है। मौजूदा मूल्य-वृद्धि को मिशन की शुरुआती परीक्षा माना जा रहा है।

परीक्षा की दृष्टि से विश्लेषण

संकेत पढ़ने की कला: एक ही समय पर दो दालों में अलग समस्या, एक में संभावित उत्पादन संकट और दूसरी में भंडार संबंधी अनिश्चितता, यह दिखाता है कि मूल्य नीति आँकड़ों की सटीकता पर आधारित होनी चाहिए।

फ़सल अर्थशास्त्र: लेखकों के अनुसार तुर आठ से नौ महीने खेत में रहती है, जिसमें किसान दो छोटी फ़सलें ले सकते हैं। छोटी अवधि और जलवायु-सहिष्णु किस्मों के बिना किसानों को तुर की ओर लौटाना कठिन है। MSP पर तय खरीद किसानों को आधार देती है, पर भाव MSP से काफ़ी ऊपर होने से इस वर्ष सरकारी स्टॉक बढ़ने की संभावना कम है।

डेटा अंतर: क्षेत्रफल, मौसम, स्टॉक, भाव और व्यापार के आँकड़े मौजूद हैं, पर समय पर एक साथ नहीं आते। लेखकों का सुझाव है कि पखवाड़े में आँकड़े जोड़ने वाला **दाल निगरानी प्रकोष्ठ** बने, ताकि निर्णय भाव बढ़ने से पहले लिए जा सकें।

आगे की राह

तुर में आपूर्ति सुरक्षा, चने में भंडार की पारदर्शिता और दीर्घकाल में फ़सल अर्थशास्त्र का सुधार, ये तीनों काम साथ-साथ चलने चाहिए। साप्ताहिक स्टॉक घोषणा जैसे क़दम आँकड़ों की कमी भरने में मदद कर सकते हैं। मिशन की असली कसौटी यह होगी कि उत्पादन और क्षेत्रफल के लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए वह बाज़ार को समय पर भरोसेमंद सूचना भी दे पाता है या नहीं।

प्रिलिम्स परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. दलहन उत्पादन के आधिकारिक अनुमानों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: तीसरे अग्रिम अनुमान (27 मई 2026) के अनुसार 2025-26 में चने का उत्पादन 125.14 लाख टन अनुमानित है।

कथन 2: उसी अनुमान के अनुसार 2025-26 में तुर का उत्पादन 45 लाख टन से अधिक है।

कथन 3: 2025-26 का कुल दलहन उत्पादन 274.09 लाख टन अनुमानित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

▼ **उत्तर और व्याख्या**

उत्तर: (c)

कथन 1 सही है, तीसरे अग्रिम अनुमान में चने का उत्पादन 125.14 लाख टन है। कथन 2 गलत है, तुर का उत्पादन 35.92 लाख टन अनुमानित है। कथन 3 सही है, कुल दलहन उत्पादन 274.09 लाख टन है (PIB)।

प्रश्न 2. दलहन आत्मनिर्भरता मिशन 2030-31 तक कितने उत्पादन का लक्ष्य रखता है?

(a) 350 लाख टन

(b) 274 लाख टन

(c) 200 लाख टन

(d) 500 लाख टन

▼ **उत्तर और व्याख्या**

उत्तर: (a)

मिशन का लक्ष्य 2030-31 तक दलहन उत्पादन 350 लाख टन (और क्षेत्रफल 310 लाख हेक्टेयर) करना है। 274 लाख टन के आसपास का आँकड़ा 2025-26 का उत्पादन अनुमान है, लक्ष्य नहीं (PIB)।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. "तुर और चने की बढ़ती कीमतों के पीछे अलग-अलग कारण हैं, इसलिए नीति की प्रतिक्रिया भी अलग होनी चाहिए।" इस कथन की समीक्षा कीजिए और दलहन क्षेत्र में मूल्य स्थिरता के लिए संस्थागत व्यवस्था सुझाइए। (250 शब्द, 15 अंक)

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: थोक मुद्रास्फीति के धनात्मक होने और मंडी भाव की ताज़ा स्थिति का संक्षिप्त उल्लेख, साथ में निचले आधार का संकेत।

मुख्य भाग में: तुर में सूखे से संभावित उत्पादन संकट; चने में उत्पादन अनुमान और भंडार का विरोधाभास; आपूर्ति सुरक्षा बनाम भंडार पारदर्शिता; स्टॉक सीमा का समय; आयात नीति; दलहन आत्मनिर्भरता मिशन और फ़सल अर्थशास्त्र; साप्ताहिक स्टॉक घोषणा; दाल निगरानी प्रकोष्ठ का सुझाव।

निष्कर्ष में: संतुलित निष्कर्ष: आँकड़ों पर आधारित, फ़सल-विशिष्ट नीति ही टिकाऊ मूल्य स्थिरता दे सकती है।

स्रोत

- [1] https://indianexpress.com/article/opinion/columns/behind-rising-tur-and-gram-prices-a-supply-problem-and-an-inventory-mystery-10978276/
- [2] https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2265965
- [3] https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2173650
- [4] https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2177847
- [5] https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2180212
- [6] https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2296205
- [7] https://timesofindia.indiatimes.com/india/as-dal-prices-rise-despite-robust-availability-govt-makes-weekly-disclosure-mandatory/articleshow/135813041.cms
- [8] https://www.financialexpress.com/policy/economy-rising-prices-of-pulses-govt-make-stock-declaration-mandatory-4383888/
- [9] https://agriculture.economictimes.indiatimes.com/news/markets-and-trade/tur-prices-stay-hot-despite-ample-buffer-stock-as-crop-worries-deepen/135990107

स्रोत [1] एक विशेषज्ञ स्तंभ है। उत्पादन अनुमान और मिशन के तथ्य PIB [2] से [6] से हैं। स्टॉक घोषणा और बफ़र के आँकड़े प्रेस रिपोर्टों [7] से [9] से हैं।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

▼ दालों की मौजूदा महंगाई का सार क्या है?

एक विशेषज्ञ विश्लेषण के अनुसार दालों की थोक मुद्रास्फीति मई 2026 में धनात्मक हुई और अक्टूबर तक 12.7 प्रतिशत हो गई; मंडी में चना करीब 73 रुपये और तुर करीब 97 रुपये प्रति किलोग्राम पर है।

▼ तुर के दाम क्यों बढ़ रहे हैं?

महाराष्ट्र और कर्नाटक के सूखे से उत्पादन घटने की आशंका है, जिससे स्टॉक रोके जा रहे हैं और कुछ विदेशी निर्यातक शिपमेंट टाल रहे हैं।

▼ चने के दाम बढ़ने की पहेली क्या है?

सरकारी अनुमान में उत्पादन उपभोग से अधिक है और भंडार भी है, फिर भी दाम बढ़ रहे हैं; इससे उत्पादन अनुमान, वास्तविक स्टॉक और माँग के खिसकने के प्रश्न उठते हैं।

▼ दलहन आत्मनिर्भरता मिशन का लक्ष्य क्या है?

मिशन 11 अक्टूबर 2025 को शुरू हुआ। इसका लक्ष्य 2030-31 तक दलहन उत्पादन 350 लाख टन और क्षेत्रफल 310 लाख हेक्टेयर करना है; परिव्यय 11,440 करोड़ रुपये है।

PCSMANTRA